पंडित बंशीधर व्याकरणाचार्य अभिनंदन ग्रन्थ(फोल्डर नं. ९२९४७)

सम्पादक – पन्नालाल जैन साहित्याचार्य आदि सम्पादक मण्डल

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय

अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशन समितिके पदाधिकारी

प्रकाशन समितिके पदाधिकारी

आत्म कथ्य

सम्पादकीय

विषयक्रम

विषय क्रम खण्ड १ आशीर्वचन स्मरण शुभकामनएँ

बहुश्रुत विद्वान---------- १

मंगल आशीर्वाद ---------- १

श्रद्धा सुमन ---------- १

जैनागमके मर्मज्ञमनीषी ----------२

बहुमुखी प्रतिभाके धनी ----------२

सन्देश ----------३

राष्ट्रीय स्तरके मनीषीका अभिनन्दन ---------- ५

मूल आम्नायके संरक्षक विद्वान ---------- ५

सरस्वतीके भण्डारको भरते रहें ---------- ५

कर्मठ जिनवाणी सेवक ---------- ५

जैन विद्वानोमें कीर्तीमान ---------- ६

समाजकी महान विभूति ---------- ६

मंगल कामना ---------- ६

सही अर्थोंमें सरस्वती वरदपुत्र ---------- ६

सेवा ही जिनका लक्ष्य हैं ---------- ७

गार्हस्थ्य संन्यास और विद्वत्ताकी त्रिवेणी ---------- ७

जिनवाणीके परम आराधक ----------८

जैनजगतके गौरव पुंज ----------८

अनुकरणीय साहित्य साधना ----------८

श्रद्धा सुमन ---------- ९

जैन आगमके जागरुक प्रहरी ---------- ९

सिद्धान्तके लौह पुरुष ---------- १०

नैतिकता और कर्तव्यनिष्ठाकी प्रतिमूर्ति ---------- १०

सादा जीवन उच्च विचार ---------- ११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाजके वरिष्ठ विद्वान ---------- ११
तीर्थ भक्त पण्डितजी ---------- ११
प्रतिभाशाली विद्वान ---------- ११
वे स्वस्थ और दीर्घजीवी हों ---------- ११
आगमनिष्ठ विद्वान ----------१२
हार्दिक मनोभावना ----------१२
निर्भिक वक्ता ----------१२
मैं अभिनन्दन करता हूँ ----------१२
स्वतन्त्र विचारक एवं चिन्तक ----------१३
मैनें जैसा देखा समजा----------१३
सफल कार्यकर्ता और यशस्वी विद्वान ---------- १४
कर्मठ विद्वान ---------- १४
क्या तुम्हारे सहपाठी देव हैं ---------- १५
एकान्तका विरोध आपका लक्ष्य ---------- १५
सरलता व सहजताके धनी ---------- १६
समाजके लिए गौरव ---------- १६
अनुपम व्यक्तित्वकी मूर्ति ---------- १७
जैनधर्म और सिद्धान्तके अधिकारी विद्वान ---------- १७
सादा जीवन और उच्च विचारके धनी ----------१८
शुभकामनाएँ ----------१८
धर्म और समाजके सच्चे हितचिन्तक ---------- १९
मंगल कामनाएँ ---------- १९
आपका अभिनन्दन जिनवाणीका अभिनन्दन हैं ---------- १९
लौह लेखनीके धनी ---------- २०
जैन आगमके उच्चकोटिके विद्वान ---------- २०
जैन दर्शनके बंशीधर ----------२१
सिद्धान्त रक्षक ----------२१
स्वाभिमान और प्रज्ञाकी मूर्ति ---------- २२
चिन्तनशील विद्वत्प्रवर ---------- २२
सम्पूर्ण जीवन बेमिशाल हैं ---------- २३
आगमनिष्ठ विद्वान ---------- २३
पांडित्यके अभिनव हस्ताक्षर ---------- २४
पाण्डित्यकी प्रतिमूर्ति ---------- २५
अद्वितीय साहित्य साधक ---------- २६
मेरे नानाजी ---------- २६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यशस्वी सारस्वत ---------- २७
मौन साधक ---------- २७
असाधारण मेघावी ---------- २७
जिनवाणीनन्दनका अभिनन्दन ---------- २८
बुन्देलखण्डकी थाती ---------- २८
स्वतंत्र व्यक्तित्वके धनी ---------- २९
सादर अभिनन्दन ---------- २९
आदर्श विद्वान ---------- ३०
सरस्वतीके अनुरागी ---------- ३०
देश श्रुत और समाजसेवी ---------- ३०
महान व्यक्तित्वके धनी ----------३१
बहुमुखी प्रतिभाके धनी ----------३१
जिनवाणीके अपूर्व सेवक ----------३१
धर्म समाज और राष्ट्र सेवाके संगम ---------- ३२
शुभकामनाएँ ---------- ३२
निरभिमान व्यक्तित्व---------- ३३
मेरी उन्हें शुभ मंगल कामनाएँ ---------- ३३
समाजकी नब्जके पारिखी ---------- ३४
अभिवन्दनीय पण्डितजी ---------- ३४
शान्तिप्रिय क्रान्तिकारी समाज सेवक ---------- ३५
जैनधर्मके प्रकाण्ड विद्वानका सम्मान ---------- ३६
सालेवी भौआके लिए भावाञ्जलि ---------- ३७
कन्या राशिका चमत्कार ---------- ३८
समाजके मार्गदर्शक ---------- ३९
एक जागरुक मनीषी ---------- ४०
बंशीधरो जयतात ---------- ४१
सरस्वतीके वरद पुत्र हे बंशीधर व्याकरणाचार्य ---------- ४२
सविनय अभिनन्दन ---------- ४३
हे सरस्वतीके शत शत वन्दन शत शत प्रणाम ---------- ४४
विनय सुमन ---------- ४५
सरस्वतीके वरदपुत्रका शत शत अभिनन्दन हैं ---------- ४६
बंशीधरकी वंशी गूँज उठी ---------- ४७
शब्द सुमन से अभिनन्दन हैं ---------- ४८
सुमनाञ्जलि देते हैं ---------- ४९
हे सरस्वती के वरदपुत्र विद्वदवर तुमको शत प्रणाम ---------- ५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंशीधरके ही प्रकाश से जिनवाणी हैं जगमग दमकी ---------- ५१
युग गये गुण गान ---------- ५२
गुरुवर जीवें वर्ष हजार ---------- ५३
आपको करें समर्पित ---------- ५३
जैन साहित्याराधनामें समर्पित ---------- ५४
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं---------- ५४
पण्डित परम्पराके मूर्धन्य मनीषी ---------- ५४
किमाश्चर्यमत परम ---------- ५५
स्तुत्य निर्णय ---------- ५६
नैतिकताकी प्रतिमूर्ति ---------- ५६
पूज्य पण्डितजीसे एक बार्ता ---------- ५७
आगमके पक्षधर ---------- ५८
बहु आयामी व्यक्तित्व ---------- ५९
अभिनन्दनीयका अभिनन्दन ---------- ५९
विशिष्ट प्रतिभाके धनी ---------- ६०
मंगल कामना ---------- ६०
एक निस्पृही साधु सम वास्तविक गृहस्थ---------- ६१
श्रद्धेय पण्डितजीका स्तुत्य अभिनन्दन ---------- ६२
देश समाज एवं राष्ट्रकी अनुपम विभूति ---------- ६२
खण्ड २ जीवन परिचय भेंट वार्ता व्यक्तित्व तथा कृतित्व
श्रद्धेय पण्डितजी एक परिचय – पं. दुलीचन्द्र जैन ---------- १
साक्षात्कार (डॉ. कोठिया और व्याकरणाचार्य) – डॉ. दरबारीलाल कोठिया ---------- ९
विशाल व्यक्तित्व के धनी – डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल ---------- १६
सोंरई के प्राचीन जिनमन्दिर का वेदिका लेख एक दस्तावेज – डॉ. दरबारीलाल कोठिया ------- २४
सोंरई पूज्य पिताजी की जन्मभूमि - श्री विनीत कोठिया ---------- २७
गोलापूर्वान्वय एक परिशीलन – डॉ. कस्तुरचन्द ---------- ३२
अप्रतिम प्रतिभा के धनी – पं. पन्नालाल साहित्याचार्य ---------- ५१
वन्दनीय व्यक्तित्व के धनी – श्री नीरज जैन ---------- ५३
ख्याति लाभ मानसे परे – प्रो. खुशालचन्द्र गोरावाला ---------- ५६
साधना पथ के निष्ठावान पथिक – श्री यशपाल जैन ---------- ५९
विलक्षण प्रतिभा के मनीषी – प्रो. उदयचन्द्र जैन ---------- ६१
बीसवी सदीके गम्भीर दार्शनिक विद्वान – प्रो. राजाराम जैन ---------- ६२
राष्ट्र एवं समाज की अतुलनीय विभूति – डॉ. हरीन्द्र भूषण जैन ---------- ६४
विद्वत्ता और सहृदयता के संगम – डॉ. रतनचन्द्र जैन ---------- ६४
स्वाभिमानी विद्वान – डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर ---------- ६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संस्मरण शाह अमृतकाल जैन बीना – डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल ---------- ६७
जैनतत्वमीमांसा की मीमांसा शास्त्रीय मान्यताके परिप्रेक्ष्यमें – पं. बलभद्र जैन ---------- ६९
जैनदर्शनमें कार्य कारणभाव और कारक व्यवस्था एक समीक्षा – डॉ. पन्नालाल साहित्याचार्य ---------- ७५
जैनदर्शनमें कार्य कारणभाव और कारक व्यवस्था एक अनुशीलन – श्री नीरज जैन ---------- ७७
जयपुर (खानिया) तत्वचर्या और उसकी समीक्षा एक मूल्यांकन – डॉ. फूलचन्द्र प्रेमी ---------- ८०
भाग्य और पुरुषार्थ एक नया अनुचिन्तन समीक्षात्मक समीक्षा – डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल ---------- ८८
पर्यायें क्रमबद्ध भी होती हैं और अक्रमबद्ध भी एक समीक्षा – डॉ. सुदर्शनलाल जैन ---------- ९०
पर्यायें क्रमबद्ध भी होती हैं और अक्रमबद्ध भी एक अध्ययन – डॉ. विजयकुमार जैन ---------- ९३
जैनशासनमें निश्चय और व्यवहार एक परिशीलन – स्वस्तिश्री भट्टारक चारुकीर्ति ---------- ९४
जैनशासनमें निश्चय और व्यवहार एक विमर्श – डॉ. दरबारीलाल कोठिया ---------- ९८
मनस्वी मनीषी कुछ संस्मरण – पं. बालचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ---------- १०१
श्रद्धा सुमन – पं. शोभालाल जैन ---------- १०२

खण्ड ३ धर्म और सिद्धान्त

तीर्थंकर महावीरकी धर्मतत्व देशना - ----------३
जैन दर्शनमें आत्मतत्व ----------१८
निश्चय और व्यवहार मोक्ष मार्ग ----------३१
निश्चय और व्यवहार धर्ममें साध्य साधकभाव ---------- ५१
निश्चय और व्यवहार शब्दोंका अर्थाख्यान ---------- ५७
व्यवहारनयकी अभूतार्थताका अभिप्राय ---------- ८७
संसारी जीवोंकी अनन्तता ---------- ९२
जैनदर्शनमें भव्य और अभव्य ---------- ९८
जीव दया एक परिशीलन ---------- १०३
जैनागममें कर्मबन्ध ---------- ११६
आगममें कर्म बन्धके कारण ---------- १२५
गोत्र कर्मके विषयमें मेरा चिन्तन ---------- १३३
भुज्यमान आयुमें अपकर्षण और उत्कर्षण ---------- १३८
क्या असंज्ञी जीवोंमें मनका सम्दाव हैं ---------- १४१
पर्यायें क्रमबद्ध भी होती हैं और अक्रमबद्ध भी ---------- १४७
जयपुर खानिया तत्वचर्चा और उसकी समीक्षाके अन्तर्गत उपयोगी प्रश्नोत्तर १,२,३,४, की सामान्य समीक्षा ---------- १६६

खण्ड ४ दर्शन और न्याय

भारतीय दर्शनोंका मूल आधार ----------३
जैनदर्शनमें प्रमाण और नय---------- ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञानके प्रत्यक्ष और परोक्ष भेदोंका आधार---------- १४
जैनदर्शनमें नयवाद ---------- २०
अनेकान्तवाद और स्याद्वाद ---------- ४०
स्याद्वाद दर्शन और उसके उपयोगका अभाव ---------- ४४
दर्शनोपयोग और ज्ञानापयोगका विश्लेषण ---------- ४८
जैनदर्शनमें दर्शनोपयोगका स्थान ---------- ५८
जैनदर्शनमें वस्तुक स्वरुप एक दार्शनिक विश्लेषण ---------- ६२
जैनदर्शनमें सप्ततत्व और षटद्रव्य ---------- ६८
अर्थमें मूल और उसका समाधान ---------- ८०

खण्ड ५ साहित्य और ईतिहास

वीरांष्टकम समस्या कान्ताकटाक्षाक्षत (क्षता) ---------- १
समयसारकी रचनामें आचार्य कुन्दकुन्दकी दृष्टि ----------३
तत्वार्थ सूत्रका महत्व ---------- ७
जैन व्याकरणकी विशेषताएँ ----------१२
षटखण्डागमके संजद पदपर विमर्श ----------१८
सांस्कृतिक सुरक्षाकी उपादेयता ---------- २७
जैन संस्कृति और तत्वज्ञान ---------- ३४
युगधर्म बननेका अधिकारी कौन---------- ४४
ऋषभदेवसे वर्तमान तक जैनधर्मकी स्थिति ---------- ४८

खण्ड ६ संस्कृति और समाज

हमारी द्रव्य पूजाका रहस्य ---------- १
साधत्वमें नग्नतका महत्व ----------८
जैनदृष्टिसे मनुष्योंमें उच्च नीच व्यवस्थाका आधार ---------- १५
भगवान महावीरका समाज दर्शन ---------- २६
जैन मंदिर और हरिजन ---------- २९
भारतीय संस्कृतिके सन्दर्भमें हिन्दु शब्दका व्यापक अर्थ ---------- ३३
परिशिष्ट ---------- ३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org